ISSN 2278-554 X Lamahi

लमही

जुलाई-दिसम्बर (संयुक्तांक) 2024

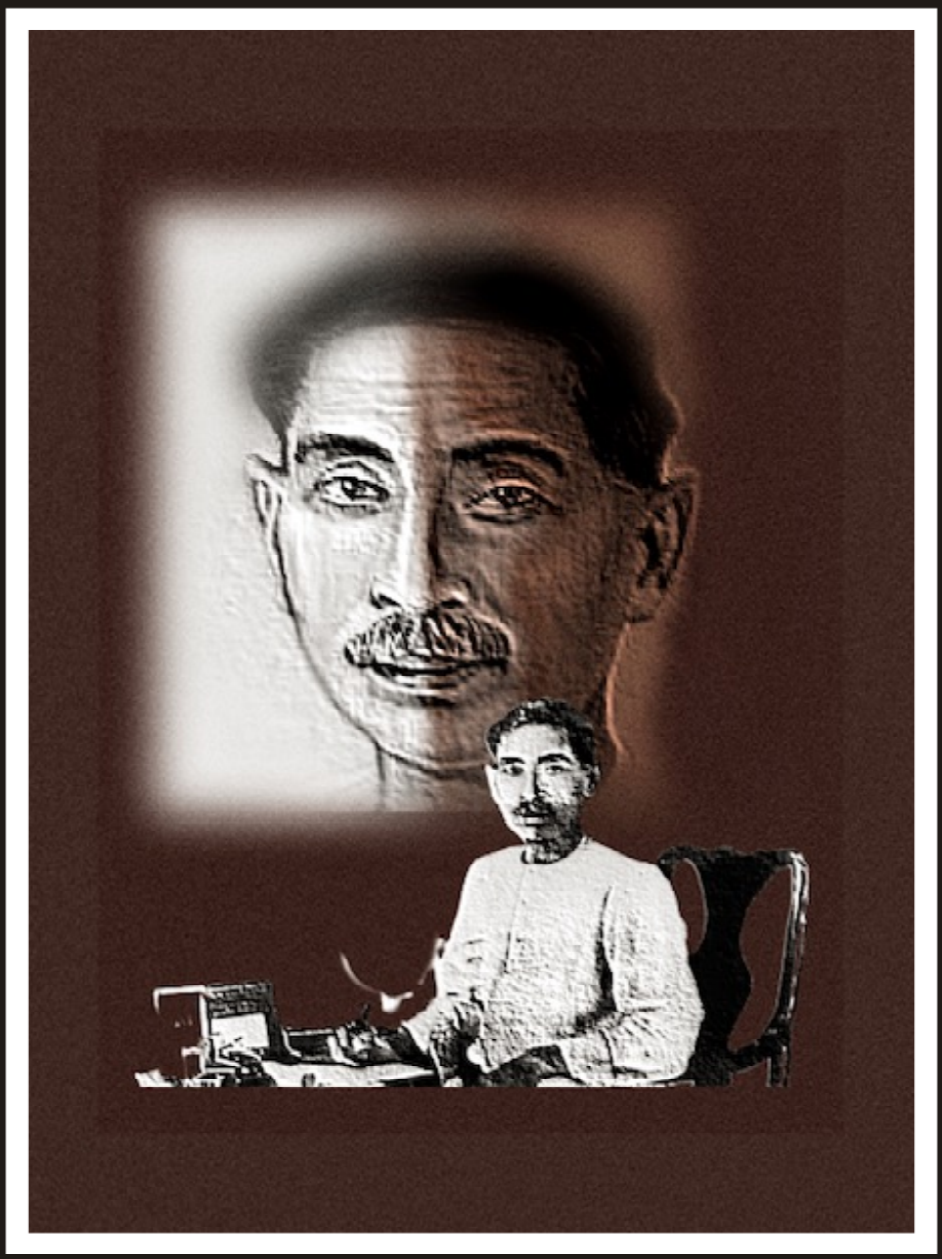

₹ 100/-

आलोचना के आलोक में प्रेमचंद

मैं एक मज़दूर हूँ, जिस दिन
कुछ लिख न लूँ, उस दिन मुझे
रोटी खाने का कोई हक नहीं।

~ प्रेमचंद

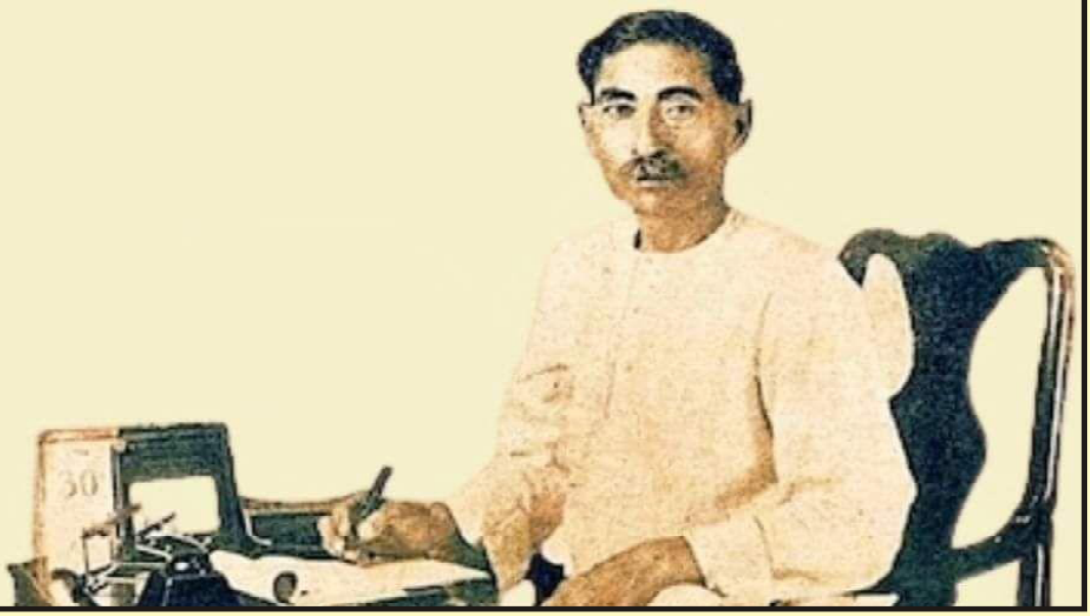

लमही

वर्ष: 17 • अंक: 1–2 • जुलाई–दिसम्बर (संयुक्ताक) 2024

इस अंक में

- सम्पादकीय — 3
- प्रेमचंद के उपन्यासों की आरंभिक समीक्षाएं —सुजीत कुमार सिंह — 5
- आखिरकार प्रेमचंद 'सरस्वती' के आरोपों से बेदाग निकल गए —डॉ. मुश्ताक़ अली — 13
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की दृष्टि में प्रेमचंद —तरुण गुप्ता — 20
- शिवपूजन सहाय और प्रेमचंद —मंगल मूर्ति — 24
- मुंशी दया नारायण निगम और प्रेमचंद —डॉ. प्रदीप जैन — 28
- जनार्दन प्रसाद झा 'द्विज' और प्रेमचंद —भारत भारद्वाज — 33
- 'प्रेमचंद घर में' : वे देवता नहीं थे — कविता — 35
- जयशंकर प्रसाद और प्रेमचंद (कथा में पात्र, ढले कथा दृश्यों में चलते–फिरते, बोलते–बतियाते प्रेमचंद) —श्याम बिहारी श्यामल — 41
- जैनेन्द्र कुमार और प्रेमचंद (एक नास्तिक संत की शक्ति का अंतरंग) —ज्योतिष जोशी — 57
- फिराक़ गोरखपुरी और प्रेमचंद —चित्तरंजन मिश्र — 68
- नलिन विलोचन शर्मा और प्रेमचंद —योगेश प्रताप शेखर — 72
- डॉ. राम विलास शर्मा और प्रेमचंद (प्रगतिशील साहित्य के निकष प्रेमचंद) —दिनेश कुमार — 76
- नंद दुलारे वाजपेयी और प्रेमचंद —विजय बहादुर सिंह — 82
- राधाकृष्ण और प्रेमचंद —संजय कृष्ण — 85
- नामवर सिंह की प्रेमचन्द विषयक धारणा —राहुल सिंह — 89
- मुक्तिबोध, हरिशंकर परसाई और प्रेमचन्द —रवि रंजन — 94
- राजेन्द्र यादव की निगाह में प्रेमचन्द —विभास वर्मा — 97
- प्रो. नवल किशोर का प्रेमचंद विमर्श —डॉ. रेणु व्यास — 101
- वीर भारत तलवार की निगाह में प्रेमचंद और उनका साहित्य —डा. अमिष वर्मा — 108
- वीरेन्द्र यादव की प्रेमचंद केन्द्रित आलोचना दृष्टि —अरुण होता — 113
- बिटवीन टू वर्ल्ड्स : एन इंटेलेक्चुअल बॉयोग्राफी ऑफ प्रेमचंद (गीतांजलि पांडेय) —अंबरीश त्रिपाठी — 119
- प्रेमचन्द विचारक के रूप में —कँवल भारती — 124
- डॉ. धर्मवीर और प्रेमचंद —सुरेश कुमार — 141

- कांति मोहन और प्रेमचंद (विशेष संदर्भ : प्रेमचंद और अछूत समस्या) —सत्येन्द्र प्रताप सिंह 149
- प्रेमचंद : समय के इस और उस पार —डा. शुभम मोंगा 156
- प्रेमचंद की साहित्य दृष्टि : उपन्यास और उसकी रचना–प्रक्रिया —श्रीनारायण पाण्डेय 159
- आलोचना के कठघरे में प्रेमचंद —शशिभूषण मिश्र 163
- मदन गोपाल और प्रेमचंद —अंकित नरवाल 168
- अमृत राय और प्रेमचंद : (जीवनी, उपन्यास, आलोचना का संगम कलम का सिपाही) —निशांत 171
- स्त्री छवि : प्रेमचंद की कहानियों के विशेष संदर्भ में —गरिमा श्रीवास्तव 177
- हिंदी उपन्यास और विधवा विवाह प्रसंग —वैभव सिंह 191
- फकीर मोहन सेनापति एवं प्रेमचंद : यथार्थ के आईने में —अरुण होता 199
- अंग्रेजी में प्रेमचंद : अनुवाद दर अनुवाद —हरीश त्रिवेदी 205
- प्रेमचंद तनकीद उर्दू में —जानकी प्रसाद शर्मा 214
- उर्दू अदब में प्रेमचंद के लेखन का महत्व —प्रो. सगीर अफ़राहीम —डॉ. अहमद रज़ा 220
- कमल किशोर गोयनका : मत भिन्नता के बावजूद —प्रदीप पंत 224
- डॉ. प्रदीप जैन का अनुसंधान और शोध कार्य —मधुर नागवान 227
- प्रेमचंद के समय से संवाद —गोपाल प्रधान 235
- फिल्म उद्योग में प्रेमचंद —सब्यसाची भट्टाचार्य 240

आवरण प्रथम : पूनम किशोर

प्रधान संपादक* □ विजय राय
संपादक* □ ऋत्विक राय
संयुक्त संपादक* □ ऋतिका □ वत्सल कक्कड़

इस अंक का संपादन* □ विजय राय □ वेंकटेश कुमार

संपादकीय एवं व्यवस्थापकीय संपर्क
3/343, विवेक खण्ड, गोमती नगर लखनऊ–226010
ईमेल : vijairai.lamahi@gmail.com, मो0 : **9454501011**
इस अंक का मूल्य : 100/– रुपये मात्र

''लमही का वेब अंक आप Not Nul (www.notnul.com) पर पढ़ सकते हैं।''

प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। इनसे त्रैमासिक पत्रिका 'लमही' और उसके संपादक–मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा

''लमही'' की स्वत्वाधिकारी, मुद्रक एवं प्रकाशक मंजरी राय के लिए श्रीमंत शिवम् आर्ट्स, 211 पाँचवीं गली, निशातगंज, लखनऊ से मुद्रित तथा 3/343, विवेक खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ–226010 से प्रकाशित।

संपादक–ऋत्विक राय*

*सभी अवैतनिक

वर्ष: 17 ● अंक: 1–2 ● जुलाई–दिसम्बर (संयुक्तांक) 2024

संपादकीय

सबसे पहले यह स्पष्ट कर देना जरूरी है कि यह विशेषांक प्रेमचंद के मूल्यांकन पर केन्द्रित नहीं है। इस विशेषांक के केन्द्र में प्रेमचंद के मूल्यांकन का मूल्यांकन है। 'आलोचना के आलोक में प्रेमचंद' इसी बात की ओर संकेत कर रहा है।

पिछले करीब 100 वर्षों से प्रेमचंद के व्यक्तिव और कृतित्व पर जारी बहसों का सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा। अब तो रचनाओं की भी जन्मशती मनाने का फैशन चल निकला है। कुछ साल पहले 'सेवासदन' की जन्मशती मनाई गई और इस साल (2024) 'सवा सेर गेहूं' और 'शतरंज के खिलाड़ी' जैसी कहानियों की जन्मशती मनाई जा रही है। इस फैशन के अनुसार अगले 10–12 वर्षों में प्रेमचंद की अनेक रचनाओं को विचार–विमर्श के केन्द्र में लाया जायेगा। प्रेमचंद पर सैकड़ों किताबें और हजारों आलेख की उपस्थिति के बावजूद इसकी संख्या लगातार बढ़ती ही जायेगी। किसी भी रचनाकार के कालजयी होने का यही प्रमाण है। यह तो सच है कि कालजयी प्रेमचंद पर विचार–विमर्श के लिए किसी बहाने या अवसर के तकाज़े की जरूरत ही नहीं है। यह विशेषांक भी 'किसी बहाने' या 'अवसर के तकाज़े' के बिना ही आपके सामने प्रस्तुत है। प्रेमचंद के बारे में यह कहा जाता है कि उन्होंने उर्दू–हिन्दी कथा–साहित्य को सरपट दौड़ना सिखाया। यह देखना दिलचस्प है कि सरपट दौड़ रहे कथा साहित्य का हाथ पकड़कर हिन्दी आलोचना ने भी दौड़ने की अपनी गति बढ़ाई। प्रेमचंद ने हिन्दी–उर्दू की वैचारिक दुनिया या हिन्दी–उर्दू आलोचना को अपने कथा–साहित्य और वैचारिक लेखन–दोनों से समृद्ध किया। आधुनिक हिंदी साहित्य का विशाल प्रासाद भारतेंदु और प्रेमचंद की अनुपस्थिति की कल्पना मात्र से ही भरभरा कर गिरने लगता है। लेकिन यह वैचारिक जगत की खूबसूरती ही है कि हम भारतेंदु और प्रेमचंद जैसे रचनाकारों के मस्तिष्क का उत्खनन करके उनकी कमियों और सीमाओं की लंबी फेहरिस्त बनाते रहते हैं। कहना न होगा कि विचार और आलोचना का कारोबार ऐसे ही चलता है।

हिंदी साहित्य की एक बड़ी विडंबना यह रही है कि उस पर विचार–विमर्श के अधिकांश रास्ते विश्वविद्यालयों के हिन्दी विभाग से होकर ही गुज़रते रहे हैं। कुछ प्रचलित पारिभाषिक शब्दावली या चल पड़े जुमले के सांचे में ही हम छोटे बड़े रचनाकारों को जाँचते–आँकते रहे हैं। इस प्रवृत्ति ने हिंदी के जिन बड़े लेखकों को अपना शिकार बनाया, उनमें प्रेमचंद भी हैं। यथार्थवाद, आदर्शवाद, मार्क्सवाद, गाँधीवाद, दलित विमर्श, स्त्री–विमर्श जैसी अवधारणाओं और प्रेमचंद–स्कूल या प्रसाद–स्कूल एवं परम्परा आधुनिकता जैसे पद के सहारे प्रेमचंद के लिखे पर हजारों–लाखों पृष्ठ रंगे गए। बी.ए. और एम.ए. के पाठ्यक्रम और बाजार को ध्यान में रखते हुए प्रकाशकों ने लेखकों–आलोचकों से प्रेमचंद पर सैकड़ों किताबें संपादित करवायी। प्रेमचंद को लाखों ऐसे पाठक मिले जो उन्हें परीक्षा पास करने के लिए मजबूरीवश पढ़ने लगे। उल्लेखनीय है कि विश्वविद्यालयों से जुड़े प्रेमचंद के लाखों पाठक घटिया दर्जे की कुंजिकाओं और सतही आलोचना पुस्तकों के माध्यम से ही प्रेमचंद को पढ़ते हैं। जाहिर है कि इस तरह के व्यापार से हमारा कोई लेना देना नहीं। इस स्थल पर यह कह देना जरूरी है कि प्रेमचंद के मूल्यांकन में विशुद्ध अकादमिक आलोचना ने ही कथा साहित्य के केंद्र में प्रेमचंद को प्रतिष्ठित किया। कथा साहित्य में पूर्व प्रेमचंद युग, प्रेमचंद युग और प्रेमचंदोत्तर युग अकादमिक आलोचना से ही निकले पदबंध हैं। विश्वविद्यालयों के हिन्दी विभाग के प्रथम पाठ्यक्रम–निर्माता विद्वान शिक्षकों ने यदि सस्ती लोकप्रिय रचनाओं पर प्रेमचंद की गंभीर रचनाओं को